R.N. College Hajipur
Geography Dept.
By :- Abhishek Kumar
part-I

पर्वत

पर्वत निर्माण की विवेचना करें

महाद्वीप तथा महासागर प्रथम क्रम के उच्चावच माने जाते हैं जबकि
पर्वत, पठार, मैदान - द्वितीयक्रम के उच्चावच होते हैं

↳ ढाल तीव्र होता है एवं
शिखर नुकीला

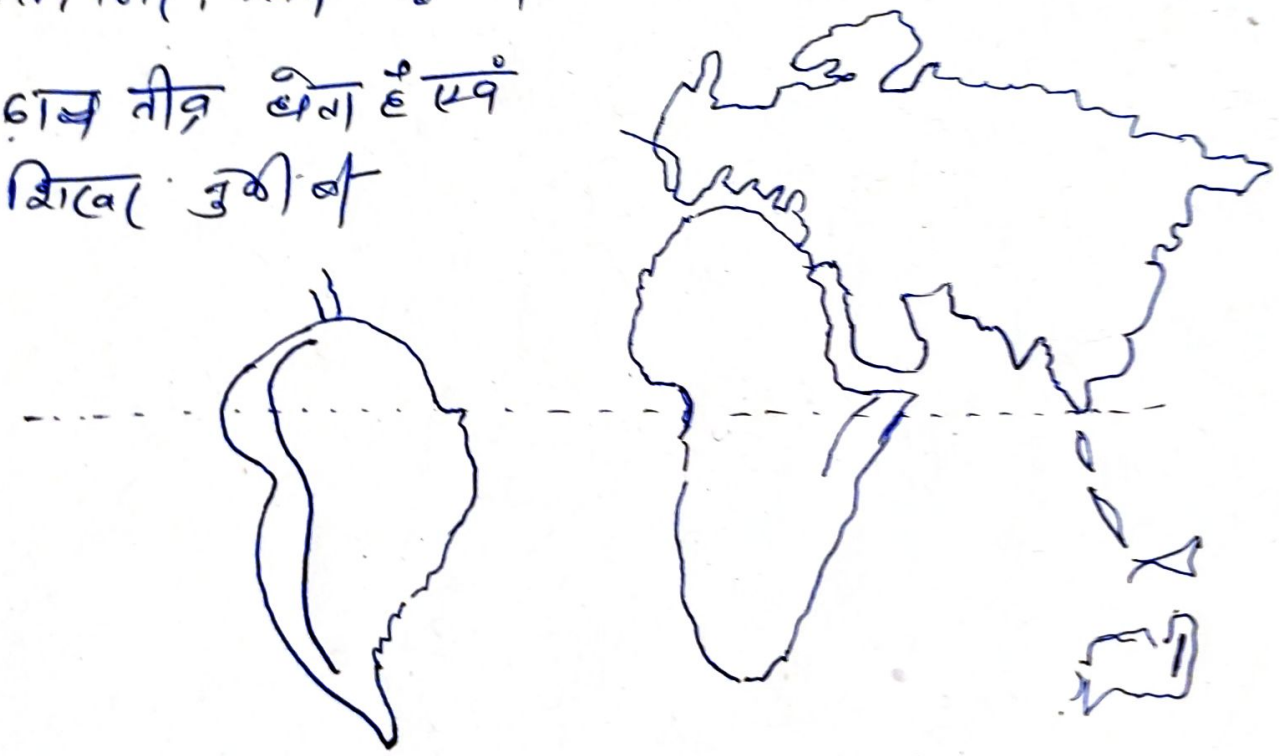

1. एण्डीज
2. रॉकीज
3. हिमालय
4. ग्रेट डिवाइडिंग रेंज

1000 मी. से ऊपर - पर्वत
1000 मी से नीचे - पहाड़ी

Megazolid PLUS

पृथ्वी सतह पर द्वितीय प्रकार की स्थलाकृतियाँ जिनकी ऊँचाई 1000 मी. से अधिक होकर सतह पर सर्वाधिक तथा सबसे ऊपरी भाग चोटी के रूप में होते हैं उसे पर्वत कहा जाता है।

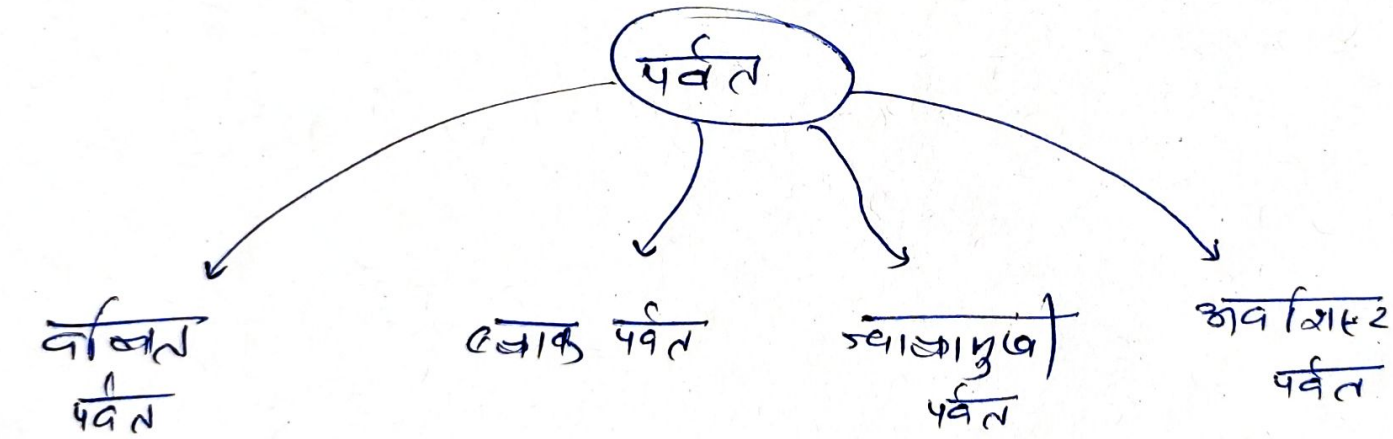

पर्वत
- वलित पर्वत
- ब्लॉक पर्वत
- ज्वालामुखी पर्वत
- अवशिष्ट पर्वत

1. **वलित पर्वत** :- दो प्लेटों के मध्य अभिसारी गति होने के कारण संपीडन बल उत्पन्न होता है जिसके कारण प्लेटों में वलन की क्रिया शुरू होती है अंततः वलित पर्वत का निर्माण होता है।

वलित पर्वत
⇓
दो प्लेटों के मध्य
⇓
अभिसारी गति के कारण
⇓
संपीडन बल
⇓
वलन की प्रक्रिया → वलित पर्वत

Megazolid PLUS

9.

भ्रंशन

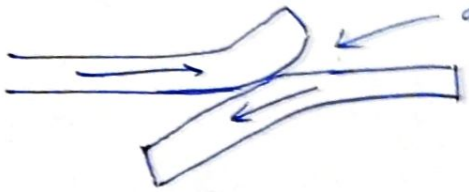

तनावमूलक बल

①

②

ब्लॉक पर्वत

③

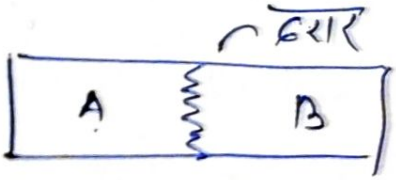

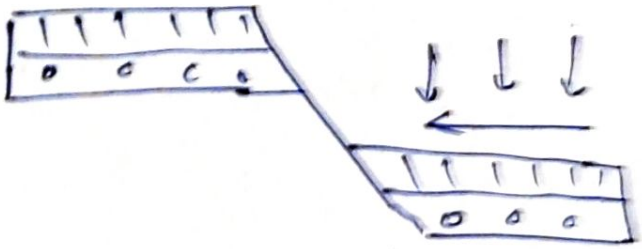

धर्सी पर्वत

MegazolidPLUS

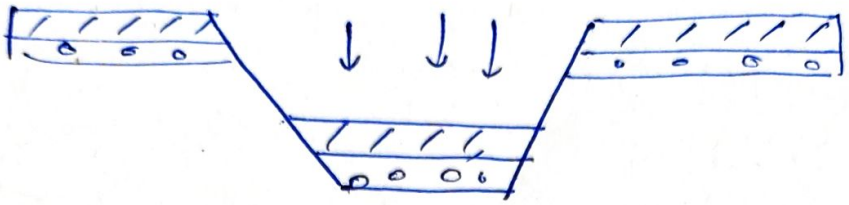

भ्रंश घाटी

पृथ्वी की सतह पर तनाव मूलक बल के कारण भ्रंशन की प्रक्रिया चलती है जिसके कारण भूखंड के डूबने या धसकने की प्रक्रिया संपन्न होती है जिसके फलस्वरूप अवरोधक पर्वत, भ्रंश घाटी तथा हार्स्ट पर्वत का जन्म होता है।

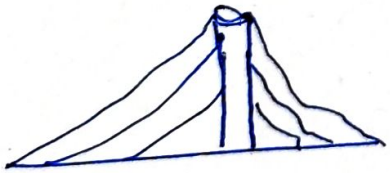

(2) ज्वालामुखी पर्वत

उदाहरण - हवाई द्वीप

सिंडर शंकु ⇒ शंकु का निर्माण ⇒ राख का योगदान

सबसे बड़ा ज्वालामुखी शंकु
का निर्माण

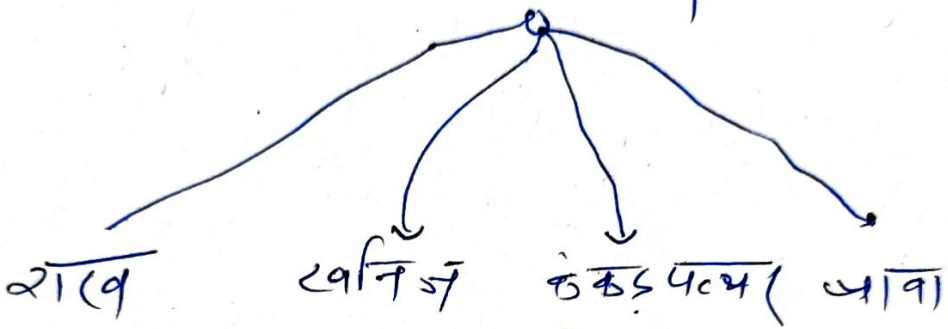

राख
खनिज
कंकड़ पत्थर
लावा

स्ट्रामबोली
↓
माउंट एटना

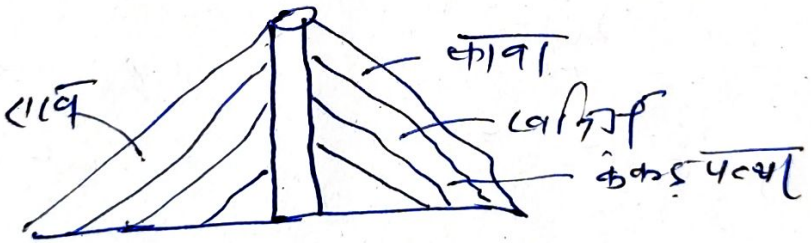

मिश्रित शंकु

अवशिष्ट पर्वत

अपरदन कारकों के द्वारा (नदी, वर्षा, पवन, हिमानी मानव) पर्वतों की ऊँचाई को लगातार कम करती रहती है। इस प्रकार अपरदन के पश्चात पर्वतों का बचा अवशेष ही अवशिष्ट पर्वत कहलाता है।

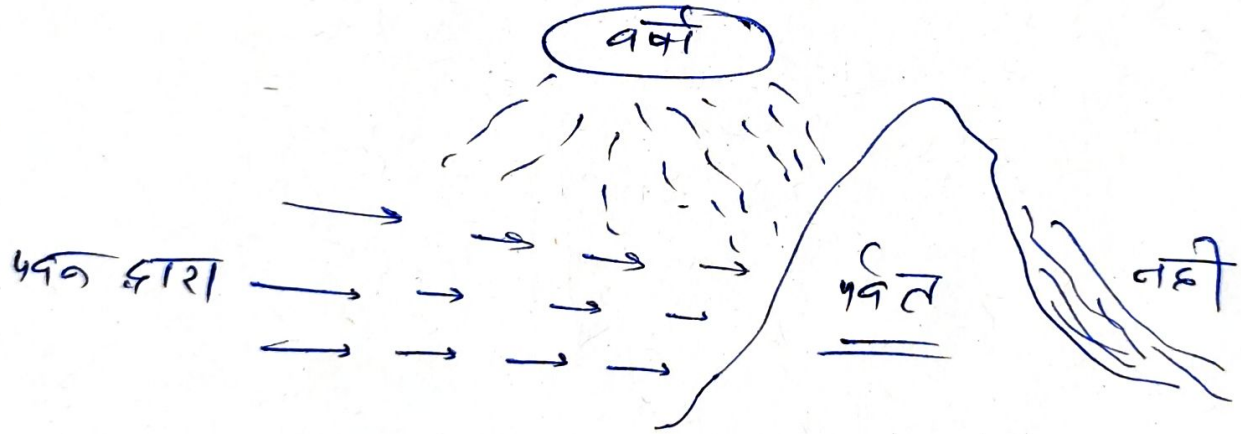

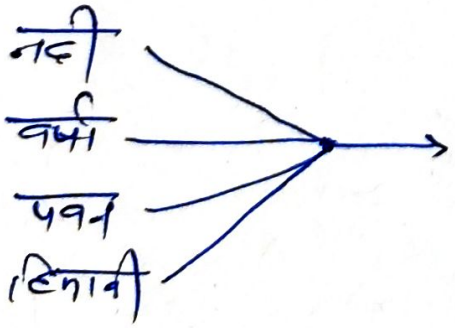

नदी, वर्षा, पवन, हिमानी → पर्वतों का अपरदन

⇓

पर्वतों की ऊँचाई ↓↓↓

⇓

अवशिष्ट पर्वत बचते हैं।